वनग्राम की लड़कियाँ

रमेश गोहे

एक खबर, जो चारों दिशाओं में फ़ैल गई थी, 'दामिनी की मौत' अब तक एक कहानी बन चुकी थी। दामिनी की मृत्यु के दुःख की तरह ही, उस पेड़ का जड़ से उखड़ जाना भी, हम सबको बहुत अखरा था। उसके उखड़ जाने के बाद से कुछ सालों तक बचे हुए चार के पेड़ में भी फल आने बंद हो गए थे। चार का यह पेड़, जो अब अकेला बच गया है, कुछ दिनों पहले इसका एक साथी और था। दोनों अगल-बगल किसी जोड़े की तरह बरसों से एक साथ खड़े थे, किन्तु दोनों का यह साथ जीवन की आखिरी साँस तक नहीं चल सका था। एक दिन तेज आंधी आयी और इसके साथी पेड़ को जड़ से उखाड़कर गिरा दिया। जमीं पर गिरा तो उसकी कई शाखाएं टूटकर बिखर गईं और अंततः वह मर गया। कुछ इसी तरह, मनुष्य संसार में भी दो दिलों ने एक होने का ख्वाब संजोया था। एक-दूजे के लिए जीने-मरने की कसमें खाई थीं। मरने-मिटने के हालात में भी, दोनों कंटीली राहों को जिन्दादिली से पार करते जा रहे थे पर नियती ने ऐसा कहर ढाया कि उसकी भरपाई कभी संभव नहीं थी।

हमारे खेत में अब एक मात्र बचे चार के पेड़ से कुछ दूरी पर एक नाला है। नाले के उस पार सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला का एक छोटा सा पर्वत है। उस पर्वत पर बरगद का पेड़ है। बरगद का पेड़ उस उंचाई पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह आसपास के पेड़ों का मुखिया हो, ! ठीक गाँव के जमींदार या साहूकार की तरह) जो सबकी रखवाली करता हुआ बरसों से धूप, बारिश और ठण्ड झेलता खड़ा है। कुछ लोग कहते हैं- उस बरगद के नीचे मत जाना, वहां रात भर भूतों का मेला लगा रहता है। रोने-चिल्लाने की भयंकर आवाजें आती हैं। कई दीये जलते एक-साथ जगमगाने लगते हैं। उस बरगद के पेड़ से सब डरते हैं, जैसे गाँव के मुखिया से भी सब डरते हैं। शायद इसीलिए आज तक किसी ने भी उसे कांटने की हिम्मत नहीं की। आँधी और तूफ़ान भी आज तक उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाए थे। वैसे बरगद के पेड़ से डरने के, एक साथ कई कारण थे। उस खेत के किसान जमलू को, उसी बरगद के नीचे एक सांप ने डंस लिया था और बचाने की कई कोशिश

रमेश गोहे युवा कवि और कथाकार हैं। इनकी एक काव्य संग्रह 'पगडंडियां' प्रकाशित। वर्तमान में हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

करने के बाद भी वह नहीं बच पाया था। जमलू मरते–मरते कह गया था- उस बरगद के नीचे मत जाना...। शायद वह और कुछ कहना चाहता था, पर बोलते-बोलते ही हकलाता हुआ वह हमेशा के लिए चुप हो गया। एक पागल कई दिनों तक बरगद के पास ही,अपना डेरा जमाकर रहने लगा था। उसके पास से आने–जाने वाले लोगों को पत्थर मारता था। पर कुछ लोग हिम्मत करके बरगद के पास जरूर जाते थे। जमलू की पत्नी, उसकी मृत्यु की बरसी पर उस बरगद के नीचे एक दीया जलाकर रख आती है और उसका बेटा जब कभी बकरियां लेकर उस पेड़ के पास से गुजरता तो दूर से ही अपने पिता को याद करते हुए दोनों हाथ जोड़कर धरती पर माथा टिका देता। कभी–कभी वह, उसके पास खड़ा-खड़ा घंटों तक कुछ बड़बड़ाते रहता। कभी वह स्वयं को अपनी उम्र से बहुत बड़ा समझने लगता और समझदारी की बातें करने लगता। वनग्राम में धीरे-धीरे सब कुछ इसी तरह चल रहा था।

इन्हीं, चार–जामुन और महुआ के पेड़–पौधों की छाँव तले, हम दोनों (दामिनी और मैं) धीरे-धीरे 'किसी लता और पेड़ के तने की तरह' दोस्त बन रहे थे। हम सम-वय तो नहीं थे, पर उम्र का बहुत फासला भी ना रहा होगा। वह कक्षा आठवी की छात्रा थी और मैं कक्षा दसवी का छात्र। मेरे गाँव की लड़कियां आँठवी क्लास पढने के बाद स्कूल नहीं जाती हैं। वैसे, सभी वनग्रामों का यही हाल है, गाँव में जितनी कक्षा तक स्कूल है, लड़कियों को उतना ही पढ़ाया जाता है। आगे की पढ़ाई उनके लिए नहीं होती है! अगर स्कूल ना जाना हो तो, आदिवासी लड़कियां सलवार शूट या स्कर्ट और शर्ट कम ही पहना करती हैं, सात-आठ साल की उम्र होते ही साड़ी ही पहनने लगती हैं। पर इतनी कम उम्र में साड़ी कहाँ संभाल पाती हैं लड़कियां और साड़ियाँ ही कहाँ संभाल पाती हैं इन लड़कियों को..! निगोड़ी गरम हवाएं कहीं ना कहीं से छू ही लेती है इनके जिस्म को ....। और जल जाती है लडकियां। ऊपर से गर्मी का मौसम,जिसमें सब कुछ जलते रहता है। धरती जलती है, आसमान जलता है। निर्जन आसमान की तो कोई बात नहीं, किन्तु जीवन भार को ढ़ोने वाली धरती पर आग इस तरह फ़ैल जाती है कि, जलती धरती पर फिर क्या–कुछ नहीं जलता। कहते हैं, दिलों के जलने की कोई रुत नहीं होती, फिर भी मुझे ऐसा लगता है, इन दिनों में दिल कुछ ज्यादा ही जला करते हैं। धरती की तपन को कम करने के तो कुछ उपाय होते भी हैं, पर ...दिलों में लगी आग, पूरी तरह से कब बुझ पाती है! उफ़्फ़.....ये गरम लपटें....!

एक दिन मैंने देखा चार के पेड़ के नीचे दामिनी और सुनीता आई हैं। दोनों किसी बात पर बहस कर रही हैं! दामिनी- नहीं, जिद मत कर तू अभी इतनी बड़ी नहीं हुई है। सुनीता- तो क्या तू बहुत बड़ी हो गई है? मैं भी समझती हूँ सभी चीजों को। देखना आज मैं वो कहानी सुनकर ही रहूंगी। आने दो उसे। सामने देखो दीदी कौन आ रहा है? और आगे बढ़ता हुआ मैं दामिनी को देखता हूँ। दामिनी को देखते ही मेरी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैं जल्दी–जल्दी पेड़ की ओर बढ़ने लगा था। मेरे वहां पंहुचते ही दामिनी वहां से जाने लगी, और मैं अधीर होता हुआ पूछने लगा दामिनी....क ...कहाँ....का...कहाँ..जा रही हो? क्या तुम मुझसे अब तक नाराज हो? दामिनी..मै...दामिनी...और मेरी हड़बड़ाहट देखकर, दामिनी मुस्कुराती हुई बोली- मैं कहीं नहीं जा रही हूँ, बस अभी आती हूँ। ज़रा बकरियों को दूर खदेड़कर आऊं ...और हाँ, मै तुमसे अब तक नाराज नहीं हूँ ....बुद्धू कहीं के..। दोनों तरफ से खिलखिलाती हँसी..! जल्दी आना...पगली कहीं की...। बुद्धू... पगली....।

धीरे–धीरे दामिनी दूर चली गई। अब सिर्फ उसकी छाया भर दिखाई दे रही थी और धूल पर जमे, उसके पैरों के निशान, जो उसी दिशा की ओर उन्मुख थे। क्या उसके पैरों के वें निशान मुझे भी उधर ही बुला रहे थे या उसकी बात सच थी ...? अभी आती हूँ। सुनीता मेरा हाथ पकड़कर झटकती हुई, मेरी भावतन्द्रा तोड़कर, मुझसे कहती है- मैं तुम्हें गाना सुनाऊं? सुनीता दामिनी की चचेरी बहन है,जो अभी कक्षा पांचवी में पढ़ती है। सुनीता ने पलास के पत्तों का दोना बनाकर उसमें चार के कुछ खट्टे-मीठे फल जमा करके रखे थे, उन्हें मेरी ओर बढाती हुई बोली- लो...खाओ।

मैंने बे-मन से, चार के काले-काले, एक-दो फल उठाये और मुंह में डालकर चूसने लगा। अब तक सुनीता ने एक लोकगीत गाना शुरू कर दिया था... "ऊंचो सड़ेका तरिमा हो, सांगो सड़ेका झोक सिया लाता" इस लोकगीत का मतलब, कुछ इस तरह होता है – सखी चार के ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर मत चढ़ो, हवा का झोका तेजी से चल रहा है और चार के पेड़ हिल रहे हैं, ऐसे में तुम पेड़ से गिर जाओगी। लोक-गीत ख़त्म करके वह मुझसे कहती है- मुझे कहानी सुनाओ ना....कहानी..? अच्छा सुनो– एक था राजा, एक थी रानी...। नहीं ...नहीं ...यह कहानी मुझे नहीं सुननी। इस कहानी को तो मैं कई बार सुन चुकी हूँ। तो... कौन सी कहानी सुननी है तुम्हें? वह कहानी, जो दामिनी तुम्हें सुनाती है। तो तुम दामिनी से ही क्यों नहीं सुनती वह कहानी? वह मुझे नहीं सुनाती ..कहती है- तुम्हारे सुनने की कहानी नहीं है। वह मुझे हमेशा यही 'राजा और रानी' की पुरानी कहानी सुनाती है। मुझे नहीं सुनना उससे ...! और सुनीता रुआंसी हो जाती है....अरे सुनीता ये क्या... तुम तो रोने लगी और सुनीता उसी तरह बोल रही थी.....वह दादी के पास सोती है और दादी उसीच को अच्छी-अच्छी कहानी सुनती है। आँखों से ढूलक पड़ी बूंदों ने उसके

गालों पर कुछ रेखाएं बना दी थी। मैं सोच में पड़ गया कि सचमुच सुनीता को वह प्रेम कहानी कैसे सुनाऊं ? वह अभी बहुत ही छोटी है, कई बातों को समझ भी नहीं पायेगी। मैंने भी टालते हुए उससे कह दिया- अच्छा, मैं दामिनी से कहूँगा फिर वह तुम्हें सुनाएगी और अगर नहीं सुनाएगी तो फिर मुझे बताना। सुनीता से ऐसा कहते कहते ...मैं कहीं डूबने लगा था। मेरा मन हिलोरे लेने लगा था, हृदय धड़कने लगा था, जैसे सागर में पानी बड़ी-बड़ी लहरों के थपेड़े ले रहा हो। माथे पर पसीना आ गया था। गर्मी की वजह से या.... कुछ सोचने की वजह से, पता नहीं ? गरम दिनों की ये गरम लपटें...उफ्फ !

हवा का एक तेज झोंका आया और मुझे कुछ राहत महसूस हुई, मेरे बाल उड़ने लगे, कपड़े लहराने लगे। दूर से पास, वापस आती हुई दामिनी दिखाई दे रही थी। वह धीरे–धीरे जितनी पास आ रही थी, मैं चेतन और प्रसन्न हो रहा था। जैसे..... मेरा मन, मेरे तन में वापस आ रहा था और मुझे कोई नगमा सूझ रहा था.... 'धीरे-धीरे से मेरी जिन्दगी में आना धीरे-धीरे से ... ।' यह नगमा होठों से बाहर निकलता उससे पहले ही दामिनी मेरे एकदम पास तक आ गई थी। पास आते ही वह मुस्कुराने लगी और मीठी आवाज में मुझसे बोली–कैसे हो....?

हाँ, मुझसे कुछ कहना चाहते थे ना.... ?

बताओ क्या बात है, बोलो ना ... ।

उसने प्रश्नों की झड़ी ख़त्म की और मंद-मंद मुस्कुराने लगी।

उसकी मुस्कुराहट ने अचानक, जैसे मेरे अन्दर प्राण भर दिए थे। वह लगातार मुझे देखे जा रही थी, मुस्कुराती जा रही थी। और मैं... कुछ ना बोल पाने की स्थिति की गहराई में धंसता ही चला जा रहा था। पता नहीं क्यों, आज मुझसे उसके सामने कुछ भी बोलते नहीं बन रहा था। वैसे तो उससे मिलने पर मुझे ज्यादा कुछ बोलने की जरुरत भी नहीं पड़ती थी, पूरे समय वही बोलती थी, पर आज की बात ऐसी भी नहीं थी। आज सब कुछ अलग ही था, जो हमेशा नहीं होता था।

दामिनी ने आँखों के इशारे से एक बार फिर प्रश्न किया। आखिरकार ..हड़बडाता हुआ मैं वही एक पुराना, घिसा–पिटा सवाल पूछ बैठा....कहीं मधुमक्खी का छत्ता देखा है क्या ? दामिनी कई दिन हो गए शहद पीये... । दामिनी के साथ मैं,अब तक कई बार शहद निकाल कर पी चूका था। वह शहद निकालने का मंत्र और तरीका दोनों जानती थी, मुझे भी कहीं मधुमक्खी का छत्ता दिख जाता तो उसी को बताता। वह छत्ते को तोड़ती और हम दोनों साथ बैठकर शहद पीते। रायमुनिया की झाड़ियों में हम घंटों मधुमक्खी का छत्ता खोजते रहते और कभी मिल जाता तो उसे दामिनी ही तोड़ती। पलास के पत्तों का दोना बनाते, उसमें शहद इकट्ठा करते किसी पेड़ की घनी छाँव में बैठते और इसी तरह शहद चाटते-चटाते हुए दोपहर का आनंद लेते रहते।

इस प्रक्रिया में मैं उसके सौन्दर्य को खूब ठीक ढंग से निहार पाता था। वह भी मुझे इसी तरह निहारती थी या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। पिछली बार इसी तरह शहद....वाली प्रक्रिया में उसने मेरी ऊँगली काट ली थी और मैंने गुस्से में उसके गाल पर एक चांटा मार दिया था। उस दिन से लगातार मेरी बेचैनी बढती जा रही थी। इधर कुछ दिनों तक दामिनी दिखी भी नहीं थी, लगा वह नाराज न हो गई हों।

शायद अब शहद साथ–साथ नहीं पिया जा सकता ! पर दामिनी आज मेरे सामने थी और उसके हावभाव से ऐसा कुछ भी नहीं लग रहा था कि, वह मुझसे नाराज होगी। मैं फिर से एक बार पूछना चाहता था कि.... दामिनी तुम मुझसे नाराज तो नहीं...? पर दामिनी ने पहले ही बातों का मोर्चा संभाल लिया था।

वह इस बीच की कई घटनाएं बताने लगी थी-एक लड़के ने, उससे एक बार शाम को, झाड़ियों में अकेले में मिलने की बात कही थी और उसने सीधे जाकर उस लड़के की माँ को बता दिया, लड़के की माँ ने लड़के के बाप को और बाप ने लड़के की खूब धुनाई की। अब वह दामिनी की तरफ देखता भी नहीं। लेकिन उसने कहा था, कभी ना कभी वह इस मार का बदला जरूर लेगा ! दामिनी की माँ ने दामिनी से भी कहा कि, इन लड़कों से ज्यादा मत बतियाया करो। पता नहीं, लड़के सामान्य बातों का क्या मतलब निकाल लें ! अब वह बकरियां चराने भी कम ही निकला करती थी और निकलती भी तो घर से ज्यादा दूर नहीं जाती।

मैंने फिर पूछा- दामिनी चलें कहीं मधुमक्खी का छत्ता खोजने ?

मेरी बात का बिना जवाब दिए ही दामिनी, मेरा हाथ पकड़कर आगे बढ़ गई थी। हम दोनों कहीं जा रहे थे लेकिन मंजिल दोनों को नहीं मालूम थी। आज किस दिशा में निकल जाएँ, यह भी पता नहीं था। कहीं कुछ ....नहीं....! मुझे उस पर भरोसा था, लेकिन खुद पर... ? क्या आज का एकांत मुझे.....? नहीं-नहीं.., ऐसा नहीं हो सकता, और दामिनी भी ऐसी लड़की नहीं थी। खैर ....जो भी हो ! हम निकल तो पड़े ही थे किसी अनजानी राह पर। मेरे मन में कुछ अलग हो जाने का अंदेशा जरुर था और चलते-चलते....हम दोनों, सबकी नजरों से दूर....झाड़ियों में छुप गए थे ! आज मौसम का मिजाज भी कुछ ठीक नहीं था। मन से आसमान तक बादलों का कालापन निरंतर बढ़ता जा रहा था। हवा कभी–कभी आँधी का रूप ले लेती थी और पेड़ झूमने लगते थे। लग रहा था जैसे बारिश के आगमन की ख़ुशी से नृत्य

कर रहे हों ! जो भी हो किन्तु, आज मेरे मन में कई शंकाएं थीं और दामिनी से पूछने के लिए, ढेर सारे सवाल । इसी बीच दामिनी चहकी....अरर..रे वाह ...वो देखो । कहाँ.. ? उस पेड़ पर देखो ...अरे... हाँ, यह तो बहुत बड़ा छत्ता है । मैं सोच रहा था....शहद भी ज्यादा निकलेगा और हम साथ बैठकर देर तक पीयेंगे । और मैं क्या सोच रहा था कि शहद पीते–पीते मैं, दामिनी से पूछ लूँगा मेरे मन में जो चल रहा है । क्या वह राजी होगी या कुछ...?

कुछ देर बाद दामिनी, हाथ और चेहरे पर बिना कोई कपड़ा बांधे ही पेड़ पर चढ़ गई और मधुमक्खी का छत्ता तोड़ने की कोशिश करने लगी । आज मधुमक्खी का छत्ता बहुत ऊंचाई पर मिला था और हवा भी तेज चल रही थी । किसी तरह दामिनी मधुमक्खी का छत्ता तो तोड़ लेती है,किन्तु आज दामिनी को मधुमक्खियों ने उसके गाल, कलाई, कपाल, और गर्दन जैसी कई जगहों पर काट लिया था । उसका चेहरा बुरी तरह सूज गया था। दामिनी की एक आँख सूजकर बंद हो गई थी । मैं उसकी सूजी आँख देखकर करुण तो हुआ पर मेरी आँखों से करूणा ना निकलकर होठों से हँसी निकल आई थी । उसकी स्थिति कुछ ऐसी थी कि वह कभी हँस रही थी,कभी रुआंसी हो रही थी । मैं भी तो उसी लय में उसके साथ था ! हम दोनों आज बहुत कारणों से खुश थे और कुछ कारणों से निराश !

हम अपने-अपने घरों की ओर वापस लौट आए थे । आज भी मेरे सवाल, मेरे पास सुरक्षित थे और उसके जवाब, उसके पास । उस दिन के बाद से दामिनी, दस–बारह दिनों तक बाहर दिखाई नहीं दी। अब बकरियाँ लेकर भी इधर दिखाई नहीं देती, कभी–कभार सुनीता जरुर दिखाई दे जाती । उसकी बकरियाँ भी सुनीता ही चरा लेती थी । सुनीता गर्मी की छुट्टियों में दामिनी के साथ ही बकरियां चराती थी । गाँव में लगभग सभी आदिवासियों के घर बकरे-बकरियां, मुर्गे-मुर्गियां और मवेशियां पाली जाती हैं । इनको चराने की जिम्मेदारी ज्यादातर इनके बच्चों पर ही होती है, कुछ बच्चे तो इसीलिए, स्कूल भी नहीं जा पाते क्योंकि उनको बकरी और घर में पाली हुई मवेशियां चराना पड़ता है ।

मधुमक्खी के काटने वाली घटना के एक साल बाद,दामिनी से मेरी मुलाकात होती है । इस एक साल में दामिनी में गजब का निखार आ गया था । अब वह पहले से बहुत ज्यादा सुन्दर लगने लगी थी । उसकी आवाज में कोयल जैसी मिठास भर गई थी । कोई उससे बात करता तो अकारण ही बहुत देर तक बातें करते रहता, मैं भी । दामिनी को भी अब तक घर और समाज ने लड़की की सीमाएं समझा दी थी। वह बात करते-करते बीच में ही कहने लगती– ..तो ठीक है, अब मैं चलती हूँ, माँ मुझे ढूंढ रही होगी । मुझसे कहती- ज्यादा बातें नहीं...., कोई हमें यूँ बातें करते देख लेगा तो हमारे बारे में क्या सोचेगा । मुझे भी उसकी ये बातें कभी-कभी सच लगने लगती थीं । वह सच ही तो कहती थी, समाज ने जो सीमाएं निर्धारित करके रखी है उनको लांघना, उनसे ज्यादा सोचना सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन ही तो है ।

दामिनी अब धीरे–धीरे, पंद्रह–सोलह साल की हो चली थी और इस उम्र का सौन्दर्य, अहा...क्या कहना...! उसे जो देखता तो बस देखते ही रह जाता था, मैं भी । दामिनी अब बकरियां भी कम ही चराया करती थी और मुझसे भी, पहले की तरह बेबाक बातें नहीं करती । अब तक मैं, दामिनी के साथ तीन-चार गर्मी की छुट्टियाँ बीता चुका था । चार- जामुन के पेड़ और महुआ की मुहाड़ी ही हमारे मिलने के स्थान थ । मुहाड़ी में मिलते तो साथ बैठने का अवसर ज्यादा मिलता । अलाव जलाकर तापते और घंटों बैठकर बतियाते रहते । बहुत सारे लोग इकट्ठे होकर, अलाव के पास ही लोकगीत और कहानी-किस्से सुनते–सुनाते ।

जब तक महुआ ठीक से नहीं गिर जाता, तब तक मुहाड़ी में महुआ बीनने वाले लोग, इसी तरह से समय बीताते । मुहाड़ी में ढ़ेर सारे अलाव जलते, जिनमें अपनी-अपनी उम्र वर्ग और एक मिजाज के लोग होते । बच्चों का समूह अलग, उम्रदराज लोगों का अलग,हम जैसे किशोरवय लोगों का समूह अलग । जब तक महुआ गिरकर धरती को पीली चादर से न ढंक दे, तब तक कोई भी इन अलावों के पास से उठकर नहीं जाता । जब महुआ गिरकर ढ़ेर हो जाता तो लोग धीरे-धीरे उठकर अपने-अपने पेड़ों की तरफ निकल पड़ते । बस फिर किसी लोकगीत की धुन पकड़ लेते और गुनगुनाते हुए महुआ बीनने में व्यस्त हो जाते ।

महुआ बीनते समय किसी को, किसी का ख्याल नहीं रहता । दोपहर की तेज चटक धूप, पेड़ों के नीचे गिरा हुआ पीला जरद महुआ, रह–रहकर माथे से चूता पसीना, कोई लोकगीत की धुन पर थिरकते हाथ टप-टप महुआ बीनने में व्यस्त हो जाते और हो जाते सब कोई अपने में मगन.... ! बसंती, मुहाड़ी में आने वाली एक बुजुर्ग महिला थी, जो कभी-कभार ही मुहाड़ी में आती थी । वह सभी के पेड़ों के पास जाकर, बोलती–बतियाती थी । बसंती महुआ बीनने कम, बोलने-बतियाने ज्यादा आती थी । वह बोलती तो, जोर–जोर से बोलती, दूर-दूर तक उसकी आवाजें सुनाई दे जाती । मुहाड़ी के सारे लोग समझ जाते कि आज मुहाड़ी में बसंती आई है ।

बसंती गाँव के रिश्ते में मेरी बहन लगती थी । इसलिए मैं उससे कभी भी हंसी–मजाक नहीं करता, लेकिन वह मेरे पेड़ों के पास आती तो जोर-जोर से बोलती- 'मड़मी बप्पोड कीकी रो, पार सियानो आसेती' इसका अर्थ होता-शादी कब करेगा रे, पूरा जवान हो गया है । मैं कुछ नहीं बोलता, बस थोड़ा सा मुस्कुरा भर देता ।

वह कहती–हमारे जमानें में दस–बारह साल की उम्र में ही विवाह हो जाता था और.... बोलते-बोलते वह आगे निकल जाती। आगे वह दामिनी के पेड़ों के पास भी जाती और दामिनी से भी बातें करती। दामिनी को एकदम पास बुलाकर उसके कान में धीरे-धीरे कुछ कहती और फिर घर चली जाती। बसंती जिस दिन मुहाड़ी में आती उस दिन से चार–पांच दिनों तक दामिनी मेरे पेड़ों की ओर नहीं आती पर जब भी दामिनी मेरे पेड़ों के पास आती तो हम लोग मिलकर,चने का होरा और सूखा हुआ महुआ भूनते और साथ बैठकर खाते। होरा वाली टीम में और भी कई लोग साथ हो जाते। सभी लोग बारी-बारी से होरा अपने खेतों से लाते।

चने का होरा और महुआ की भी एक अलग ही कहानी है...!

माँ बताया करती थी...! अकाल के दिनों में महुआ ने ही वनवासियों–आदिवासियों के प्राण बचाए थे। अकाल के समय में लोग चना और महुआ भूनकर खाते थे। मक्का–ज्वार की पेज बनाकर पीते थे। रोटी सिर्फ हल जोतने वाले और परिवार के मुखिया को ही मिलती थी। अकाल के दिनों में सांवा और कोदो–कुटकी की प्रजाति के घास को जमा करके उनके दानें निकालकर, उन्हें पीसकर उसके आटे से महिलाएं किसी तरह रोटी बनाकर चूल्हा जलाये रखती थीं, वरना कई दिनों तक चूल्हे के ऊपर संकट का ही धुंआ मंडराते रहता था। भले ही अब अकाल नहीं पड़ता, कोई महुआ नहीं खाता, लेकिन अकाल के बाद से अब तक लोग महुआ इकट्ठा करके रखना किसी भी साल नहीं भूलते।

आदिवासी–वनवासियों के घरों में तीज-त्यौहार के अवसर पर, ढेर सारा महुआ भिगोया जाता, दारू निकाली जाती, सब लोग इकट्ठे होकर दारू पीते और रात–रात भर ढनढार नाचते। इनके कोई भी तीज-त्यौहार बिना दारू के संपन्न नहीं होते, इनके मुख्य देवता 'बड़ादेव' ! को पहले भोग लगाते फिर प्रसाद रूप में खुद पीते। महुआ का मौसम फरवरी से शुरू होकर मध्य अप्रैल या कभी-कभी, पूरे अप्रैल तक ही चलते रहता। तब तक, माँ हमको रोज सुबह चार-पांच बजे ही जगा देती। हम सब टोली बनाकर मुहाड़ी की ओर निकल पड़ते। मुहाड़ी में सबसे पहले आने वाला रामा महुआ चोरी करके बीनने में सबसे ज्यादा चालाक और कुशल व्यक्ति था, न जाने कब वह मुहाड़ी में आ जाता था और हमारे पेड़ों के नीचे का गिरा हुआ महुआ बीनकर साफ़ कर देता था। वैसे दूसरों के पेड़ों के नीचे का महुआ बीनना, चोरी की श्रेणी में कम, चालाकी की श्रेणी में ज्यादा आता है। जो मुहाड़ी में पहले पहुँचता, इस तरह की चोरी से वह मुश्किल से ही बच पाता था, मैं भी कहाँ बच पाता था ऐसी चोरी करने से। रोज तय किया जाता था कि, कल किसका महुआ चोरी से बिनना है, किसको परेशान करना है ? ये सब करने में बड़ा मजा आता था। कुछ लोग तो रात-रात भर नहीं सोते और मुहाड़ी में पंहुच जाते थे। वैसे भी, सबके अपने-अपने दर्द होते हैं, जो उनको रात भर सोने नहीं देते, और जगाकर पहुंचा देते थे मुहाड़ी में।

हाँ, लेकिन ऐसा नहीं कहा जा सकता कि, दामिनी महुआ चोर थी, क्योंकि वह कभी भी रात में नहीं आती थी। सुबह के आठ-नौ बजे के आसपास ही उसका रोज का आना निश्चित था। हाँ दामिनी को सब चितचोर कहने लगे थे..! वह जिससे भी एक बार बोल-बतिया लेती या उसे लोकगीत सुना देती, उसका मन करता कि वह उसी से बोले-बतियाये,उसी को लोकगीत सुनाये। दामिनी के मुहाड़ी में आते ही हलचल मचने लग जाती थी। सबके मन लहराने लगते थे।

दूर से किशोरवय, ऊँची-ऊँची आवाजों में गाने-गुनगुनाने लगते, बूढ़े खांसने-खखारने लगते। मेरे पास उसके ध्यानाकर्षण का ऐसा कोई भी ऐसा हुनर नहीं था कि वह सीधे मेरे ही पेड़ों के नीचे आ जाये। फिर भी वह औरों से ज्यादा मेरे ही पेड़ों के नीचे आकर बैठा करती थी। कभी–कभी मुझे, वही अपनी इच्छा से लोकगीत सुना देती थी। पता नहीं क्यों वह इस लोकगीत को ज्यादा गाती थी ......।

बोल वासी आधी रात,
भाभीजी मावा बगीचा ते बोल वासी,
मावोल भैया ना संतरा ता बगीचा,
संतरा लगी लटालोड़,
भाभीजी मावा बागीचा ते बोल वासी......।

लोकगीत का मतलब कुछ इस तरह होता है –भाभीजी मेरे बगीचे में आधी रात संतरा चुराने कौन आता है, मेरे बगीचे में खूब फल लगे हैं। युवतियां इस गीत को अक्सर गाती हैं।

गीत सुनने के बाद मैं कहता- दामिनी तुम तो बहुत ही अच्छा गाती हो। मेरे ऐसा कहने पर वह, बस जरा सी मुस्कुरा भर देती, पर कहती कुछ नहीं। एक दिन मेरे पेड़ के नीचे बैठी–बैठी ही वह मुझ से कहने लगी– कोई कहानी सुनाओ ना....। मैं कहता- दामिनी मुझे कहाँ कोई कहानी आती है।

दामिनी- झूठ मत बोलो..स्कूल की बड़ी कक्षाओं में तो अच्छी-अच्छी कहानी पढ़ते होंगे....सुनाओ ना कोई अच्छी कहानी।

थोड़ी देर के लिए ...मैं एकदम चुप..,वह भी चुप..। थोड़ी देर बाद मैंने ही उससे कहा- दामिनी मैंने तो सुना है- तुम्हें भी अच्छी-अच्छी कहानी आती है। तुम तो अपनी दादी से नई–नई कहानियाँ सुनती हो ना ?

हाँ... सुनती तो हूँ... । तो अभी कोई नई कहानी ... ? ऊँ .....हूँ... सुनाई तो है पर... ।

पर वह कहानी तुम्हे कैसे सुनाऊं....? क्यों उस कहानी में ऐसा क्या है ...?

कुछ नहीं ...बस ऐसे ही.....।

चलो सुना ही देती हूँ, हुंकारा लगाना पड़ेगा । अरे हाँ भई ...हुंकारा भी लगाऊंगा.. । दामिनी ....अब सुनाओ भी...।

तो ठीक है, सुनो ...।

एक सोलह–सत्रह साल की लड़की थी । वह रोज लकड़ी लेने जंगल जाती थी । मैं- हूँ..। और लकड़ी का गट्ठा सिर पर रखकर गाँव की तरफ वापस आती थी । लड़की को जंगल में एक लकड़हारा दिखाई देता था । दोनों एक-दूसरे पर मोहित थे, पर अभी तक आपस में कोई बातचीत नहीं हुई थी ।

धीरे-धीरे लड़की की चाहत लकड़हारे के प्रति कुछ ज्यादा ही बढ़ने लगी थी । लकड़हारा उसके सपनों का राजकुमार बनने लगा था । अब तक बिना कोई बोलचाल के, बिना कोई परिचय के, वे दूर-दूर से ही एक-दूसरे को देखा-देखी करते थे । कभी वह जंगल नहीं जाती तो उस दिन वह बहुत उदास रहती । वह जंगल जाकर लकड़ी काटने की आवाज सुनती, जिधर से कुल्हाड़ी चलने की आवाज आती वह उधर ही जाकर देखती और उसका राजकुमार दिख जाता तो वहीं आसपास लकड़ी इकट्ठा करने लगती, उसे देखती रहती और दिखती रहती । इस तरह, दूर से चलने वाली देखा-देखी से ही, अब तक दोनों खुश थे ।

एक दिन वह बहुत देर तक लकड़ी इकट्ठा करती रही । उस दिन लकड़ी का गट्ठा बहुत बड़ा बन गया था और अकेले से गट्ठे का बोझ नहीं उठ पा रहा था । आज जंगल में ही ज्यादा देर हो गई थी । आसमान में काले-काले बादल, तेजी से घूम रहे थे । ठंडी-ठंडी हवा चलने लगी थी, लग रहा था जैसे-कहीं दूर, बारिश के पहले पानी ने, दस्तक दे दी थी । वह लड़की रह-रहकर घबरा रही थी । सूरज बादलों की ओट में कहीं छुप गया था। जंगल में तीन–चार बजे के आसपास ही अँधेरा होने लगा था । लग रहा था जैसे शाम के, पांच–छह बज गए हों । गट्ठा उठाने के लिए वह, आसपास देखने लगी, पर उस लकड़हारे के अलावा लड़की को कोई भी नहीं दिखा । गट्ठा उठाने के लिए उससे कैसे कहें । आज तक उससे कोई बातचीत भी नहीं । वह उलझन में पड़ गई, सोचने लगी उसे बुलाऊं या नहीं...?

उसने लकड़ी के गट्ठे का एक छोर पकड़कर, उसे सीधा खड़ा कर दिया, फिर गट्ठे के बीच में सिर लगाकर सिर के ऊपर उठाने का प्रयास करने लगी । लकड़हारा दूर से ही यह सब देख रहा था । लड़की बार–बार प्रयास करने के बाद भी गट्ठे को सिर पर नहीं उठा पा रही थी । जब वह बहुत कोशिश के बाद भी गट्ठा नहीं उठा पाई तो हारकर बैठ गई । थोड़ी देर बाद अचानक उसका चेहरा सख्त होने लगा । वह फिर से गट्ठे को उठाने का प्रयास करने लगी । अबकी बार वह गट्ठा उठाने में सफल तो हो गई पर संतुलन बिगड़ जाने के कारण, चार-छह कदम की दूरी पर लड़खड़ाकर गट्ठे सहित गिर गई । और एक धड़ाम की आवाज ....!

लकड़हारे ने आवाज सुनी और उसके कदम खुद की बिना अनुमति के भी उधर निकल पड़े थे । हाथ भी बिना आदेश के ही गिरी हुई लड़की को उठाकर बैठाने लगे थे । लड़की रुआंसी हुई, पर रोई नहीं । उसके ओठ काँप रहे थे, लेकिन रो नहीं पा रहे थे । दूसरी तरफ लकड़हारा भी थरथरा रहा था, पसीना-पसीना हो रहा था । अब तक दोनों आपस में कुछ नहीं बोल रहे थे । अचानक हवा का एक तेज झोका आया और लकड़हारे का गमछा और लड़की की चुनरी को उड़ा ले गया । लड़की उठने को हुई तो, लकड़हारे ने कहा– मैं ले आता हूँ...। और यह कहते हुए वह उठकर आगे बढ़ गया था । वह लौटा ही था कि आसमान के काले बादल तेज गर्जना करने लगे थे। थोड़ी देर के लिए लगा जैसे, जंगल में शेर दहाड़ रहा हो और ये दोनों निहत्थे शिकार, उसके सामने हिम्मत हारकर, बेबस हो गए हो... !

एकदम घुप्प अँधेरा होने लगा था, मोटी-मोटी बूंदे,टपा-टप गिरने लगी थीं । वह लड़की को चुनरी देते हुए, अपने मन और आसमान के बादलों की गर्जना सुनकर थरथरा रहा था, काँप रहा था । अचानक तेज बिजली चमकी और और जंगल में चारो ओर उजाला फ़ैल गया । बादल जोर से गरजे और दोनों, न जाने क्यों एक-दूसरे की बिना अनुमति के भी आपस में लिपट पड़े थे । वें दोनों आसमान के बादलों की गर्जना से डर गये थे, या अपने मन के बादलों की गर्जना से हार गये थे, पता नहीं ? बिजली चमकती रही, बादल गरजते रहे, पानी बरसते रहा । प्रकृति और अपने मन के बादलों के डर से दोनों पसीना-पसीना हो रहे थे । तन और मन दोनों आज की बारिश में भीग रहे थे । दोनों आपस में कुछ नहीं बोल रहे थे, आज मन से आसमान तक सिर्फ बादल बोल रहे थे । जमीन से आसमान तक सब कुछ भयंकर था, फिर भी दोनों के मन और जीवन में मोर नाच रहे थे ।

न जाने फिर आगे क्या हुआ ?

आगे ..?

आगे.... बाद में सुनाउंगी ।

क्यों...अभी क्यों नहीं ?

अभी इसलिए नहीं क्योंकि ..क्योंकि ..।

अरे, क्या क्योंकि क्योंकि लगा के रखा है ।

तुम तो नाराज होने लगे, वो देखो...माँ आ रही है ।

अच्छा अब मैं चलती हूँ ....बाय .....।

और वह इठलाती, बलखाती हुई चली गई।

मैं कहानी को दुहराता हुआ अपने पेड़ के नीचे बैठा महुआ बीनने की कोशिश करने लगा था।

उस दिन के बाद से, दामिनी लगभग आठ दिनों तक मेरे पेड़ों के नीचे नहीं आयी। एक दिन मैं ही, उसके पेड़ों के नीचे गया। उस दिन उसके पिताजी भी महुआ बीनने आये थे। उसके पिताजी से इधर-उधर की कुछ ऐसी ही बातें करके मैं वापस आ गया। जब मैं उसके पिताजी से बातें कर रहा था, उस समय दामिनी मेरी तरफ सिर्फ देखती रही किन्तु बोली कुछ नहीं। उस दिन मैं भी उससे कुछ नहीं बोल पाया था। बस एक-दूसरे की थोड़ी बहुत देखा-देखी हुई थी। दो दिन बाद,दामिनी लगभग आठ-नौ बजे मेरे पेड़ों के नीचे आई और बोली-माँ आज मामा के घर गई है। पिताजी भी साथ गए है। माँ दो दिन बाद आएगी, पिताजी को आठ दिन लग सकते हैं। माँ, मुझसे महुआ बीनने का कह गई है।

आज दामिनी काफी खुश नजर आ रही थी। मुझसे बोली–मुझे तुमसे कुछ बात करना है।

हाँ..., बोलो ना..।

क्या कहूँ बड़ा संकोच लगता है ऐसा कहते।

बसंती ने उस दिन माँ से पता नहीं क्या-क्या कह दिया। माँ, मुझ पर बहुत नाराज हो रही थी और तुमसे बात करने का भी मना किया है। मुझसे कह रही थी कि तुम दूसरी जाति के हो और हमारे बीच में कहीं कुछ गलत हो गया तो, तो..? तो...कह रही थी कि जात-बिरादरी में बदनामी होगी। इसीलिए, मैं इतने दिनों तक इधर नहीं आई।

मन तो रोज करता था, पर क्या करूँ, मेरा बस चलता तो, मैं तो...!

हाँ ..हाँ.. बस करो,

मैं सब जानता हूँ,तुम कितनी बहादुर हो !

चुप रहो, बुद्धू कहीं के...।

पगली कहीं की ...

बुद्धू...

पगली....।

दामिनी,वो अधूरी कहानी पूरी कर दो ना। फिर तुम आओगी भी नहीं। दामिनी- और फिर तुम्हें तो मेरी याद भी नहीं आएगी, है ना...? कुछ दिन बाद तुम पढ़ाई करने चले जाओगे, फिर साल भर मेरी खबर भी नहीं लोगे। स्कूल में तो तुम्हें मेरी याद भी नहीं आती होगी, है ना ..? वहां भी तुम्हारी कोई..? नहीं दामिनी ऐसी बात नहीं है। तो कैसी बात है ? बोलो, चुप क्यों हो गए। अरे...ये क्या ? तुम तो लड़कियों जैसे ....तुमसे कठोर तो मैं हूँ, मैं कभी रोई हूँ क्या ? बताओ ...बताओ ना, बोलते क्यों नहीं ...ऊँ...? ठीक है मत बोलो ,मैं भी जा रही हूँ ,बाय...। रुको दामिनी और दामिनी मुझे चिढ़ाती हुई ...रुको दा मि नी.... ।

बुद्धू ..कहीं के।

मैं - चुप रहो पगली।

मैं क्यों रहूँ चुप, मुझे चुप रहना नहीं आता।

हाँ दामिनी मैं भी सोचता हूँ तुम हमेशा बोलती रहो, पर ये दुनिया स्त्री को बोलने कहाँ देती है....!

दामिनी तुमने ऐसा क्यों कहा कि, मुझे तुम्हारी याद नहीं आएगी। अरे बाबा मजाक भी नहीं समझते क्या ? मैं अपनी बात वापस लेती हूँ, ठीक। अब खुश ..?

मैंने पूछा -दामिनी तुम कक्षा नवमी नहीं पढ़ोगी.. ?

नहीं...! माँ और पिताजी दोनों ने मना कर दिया है, पिताजी तो कह रहे थे कि जवान लड़की हमेशा माँ–बाप की आँखों के सामने रहना चाहिए। कहीं कुछ हो गया तो, जात बिरादरी और गाँव में कोई नहीं छोड़ेगा। बदनामी की बदनामी भी और दंड भरना पड़ेगा सो अलग। मैं कहीं डूब गया था ...नारी का जन्म..व्यथा....पिता....पति...बच्चे.....और.....घर की सीमा..... कैद...! उफ्फ !

अच्छा तो आगे की कहानी सुनो...!

दामिनी की आवाज सुनकर मैं आगे की कहानी सुनने की कोशिश करने लगा।

...उसके बाद....वो लड़की उस दिन लकड़ी का गट्ठा लेकर घर नहीं आयी। उस रात, पानी रात भर गिरता रहा। गाँव के पास की पेनडोह नदी में बाढ़ आ गई थी। पेनडोह नदी की बाढ़ रात भर बढती ही रही।

वो लड़की रात भर कहाँ रही, किसी को कुछ नहीं पता !

दूसरे दिन घर आई तो, मन से जमीन तक सब कुछ भीगा हुआ था।

लड़की के जिन्दा लौट जाने पर गाँव में खुशियाँ मनाई गई।

कुछ दिनों बाद लड़की धीरे–धीरे जंगल जाना कम कर देती है। धीरे-धीरे वह घर से ज्यादा निकलना भी बंद कर देती है। कुआं–पनघट की ओर जाना भी छोड़ देती है। रोज घर में ही रहती और कभी घर से बाहर निकलती भी तो एक शाल ओढ़कर। पता नहीं क्यों, अब वह स्वयं को, सबसे बचाती रहती थी।

और..दादी..हाँ बताओ क्या दादी ? हाँ, दादी ने आगे बताया कि,उस लकड़हारे ने उस लड़की पर न जाने ऐसा क्या जादू कर दिया था, जिसके कारण वह पागलों की तरह रहने लगी थी

और गाँव की महिलाएं उसके पेट को ऐसे देखती, जैसे नजरों से ही उसके पेट का आकार माप लेना चाहती हों। खैर...!

कुछ दिनों बाद, एक रात उसके घर से, रात भर उस लड़की की चीखें सुनाई देती रही। बचाओ...मैं मर जाउंगी.. कोई बचाओ रे.. अरे हरामजादी....कुत्ती..मुझे छोड़..! साली ऐसे नहीं मानेगी... और एक जोर की आवाज...धम्म ! जैसे किसी ने किसी को जोर से लात मारी हो ..। हुआ साली दर्द ..? मुझे छोड़, नहीं तो मैं तुझे काट खाऊँगी। कुछ देर बाद सिर्फ आहें–कराहें और सिसकियाँ आती रहीं। सुबह की बेला में सब कुछ एकदम शांत था जैसे इस शांति के पहले यहाँ कुछ भी न हुआ हो। वह सब कुछ जो हुआ था, रात उसे अपने आगोश में समेट चुकी थी और सुबह के लिए छोड़ दिया था, खुलापन–खालीपन...।

सुबह-सुबह एक महिला उसके घर के पिछवाड़े से एक झोले में कुछ लेकर लौट रही थी, जिसमें से टपकता हुआ खून... रास्ते भर कोई निशानी छोड़ रहा था। सुबह–सुबह गाँव से डिब्बा लेकर जाने वाले लोगों ने देखा और आपस में खुसर–फुसर करते रहे। दोपहर तक पूरे गाँव में सन्नाटा छाया रहा, कोई किसी से खुलकर बात नहीं करता था, बस कानों में ही धीरे–धीरे कुछ बातचीत हो जाती थी। लग रहा था जैसे गाँव में कोई मर गया हो। कोई किसी से कुछ नहीं पूछ-बोल रहे थे, जैसे सब कोई जानते हों क्या हुआ है।

कुछ दिन बाद, उसके पिताजी ने गाँव वालों को खबर दी कि उसकी बेटी मर गई है, जो कुछ दिनों से बीमार थी। और शाम तक लोग उसे दफना कर आ चुके थे। गाँव के कुछ लोग कहते हैं कि, दफनाने के बाद वह लड़की, धरती फाड़कर बाहर निकल आई थी और पीछा करती हुई गाँव तक आई थी। एक व्यक्ति, जो उसका बाप था, लड़की ने उसे उठाकर पटक दिया और वापस जाकर उस बरगद के पेड़ पर चढ़कर जोर-जोर से हँसती हुई बोली कि, मैं किसी को भी नहीं छोडूंगी। मेरा जो भी दुश्मन इधर से आएगा उसकी ऐसी ही दुर्गति करूंगी, और उसका खून चूसकर पीती रहूंगी।

> काली शर्ट वाले साहब कुछ ज्यादा ही रंगीन मिजाज आदमी हैं, वे ही ज्यादातर दामिनी को छेड़ रहे थे। सब लोग खाना खा लेते हैं और उताने होने लगते हैं। सोने के पहले सब बारी-बारी से दामिनी के साथ एक तूफानी खेल खेलते और ढेर होकर, लम्बी सांसे भरने लगते हैं। दामिनी बुरी तरह से रौंदी जा रही थी, मसली जा रही थी। वह कराहती रही, सिसकती रही पर किसी को कुछ भी करने का मना नहीं करती। सब कोई उसे अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार मसल रहे थे, रौंद रहे थे और वह किसी बेजान वस्तु की तरह लेटी रही। दामिनी रात भर सुबकती रही।

इधर गाँव वालों ने उस व्यक्ति को बेहोशी की हालत में ही उठा कर घर में लाया और उसके ईलाज के लिए गाँव के प्रसिद्ध भुमका (भगत) 'बाबा देवजी मरकाम' को बुलाया, भुमका मांढरी (शरीर में देव बुलाने की प्रक्रिया) करने बैठा, उसके शरीर में देवता आया और बोला कि- यह वही लड़की है, जिसे तुम अभी-अभी दफना कर आ रहे हो। यह ऐसे नहीं मानेगी। कुछ दिन बाद इसकी शांति के लिए कुछ बड़ी व्यवस्था करना पड़ेगा। अभी इसको देने के लिए एक बकरे की व्यवस्था करो, इसको खून चाहिए तब यह मानेगी। एक बकरा लाया गया, उसकी बलि चढाई गई, तब तक उस व्यक्ति को भी होश आ गया। वह उठकर एकदम चेतन हो गया, कुछ देर पहले क्या हुआ था, उसे कुछ नहीं पता।

कुछ दिनों बाद गाँव मे लड़की का प्रेमी (लकड़हारा) पागलों की तरह घूमता दिखाई देता था। कभी-कभी वह बरगद के पास जाकर घंटों, खड़ा-खड़ा पेड़ के ऊपर देखता रहता, कभी पागलों की तरह गाँव वालों को पत्थर मारने लगता। कुछ दिनों बाद वह बरगद के पेड़ को ही अपना बसेरा बना लेता है। वहीं सोता, वहीं रहता, बरगद के ही आसपास ही घूमता रहता और शाम को वहीं आकर सो जाता। जो कोई बरगद के पास जाता, वह उसे पत्थर मारने लगता। कई दिनों तक वह बरगद के आसपास ही दिखाई देता रहा। कुछ दिनों बाद,फिर ना जाने वह कहाँ चला गया ..?

दादी बताती है कि इसीलिए उस बरगद की तरफ आज तक कोई नहीं जाते। पहले तो मना करने पर, मैं भी नहीं समझ पाती थी। लेकिन दादी के कहानी सुनाने के बाद, मुझे यह बात समझ में आई कि बरगद के पास जाने से क्यों मना किया जाता है।

ऐ ...बुद्धू... कहाँ खो गए..?

उं...हूँ..अरे बाबा कहानी ख़त्म...।

अब मैं जाऊं.. ?

मैं जा रही हूँ...हाँ...?

बाय..बा...बाय.. ब्बबाय ...बाय ...

दामिनी बाय बाय करती हुई, मुझे कहानी में गोता लगाता हुआ, अकेला छोड़कर चली गई। एक तरफ मैं कहानी में

उस लड़की की चीख सुन रहा था और दूसरी तरफ बाय बाय.. । बहुत देर बाद मैं किसी तरह कहानी से बाहर निकलने की कोशिश करता हुआ-महुआ बीनने की कोशिश करने लगा। कभी महुआ बीनने में रम जाता, और कभी कहानी में डूबने लगता। कई दिनों तक, मैं इस कहानी से बाहर नहीं निकल सका था। वैसे भी कुछ कहानी ऐसी होती हैं जिनसे जीवन भर बाहर नहीं निकला जा सकता ! और वनग्राम की लड़कियों की ऐसी कई कहानियां आज भी जिन्दा हैं । और कई बार तो कहानी सुनाने वाली पात्र लड़कियां भी उन्हीं चरित्रों में तब्दील हो जाती थीं। दामिनी की कहानी भी कुछ मिलती जुलती ही थी..! उस वक्त महुओं का गिरना रोज बढ़ता ही जा रहा था, सभी के पेड़ महुआ की कूचियों !कलियों) से लद गए थे, मेरे भी। कहानी ख़त्म करने वाले दिन से, आठ–दस दिनों तक दामिनी मेरे पेड़ों के नीचे नहीं आयी थी और वैसे भी अब, सभी महुआ बीनने में व्यस्त रहते थे। किसी के पास अब समय नहीं बचता था।

सभी लोग दोपहर के, बारह से एक बजे तक महुआ बीनते और सिर पर महुआ की टोकरी रखकर, अपने-अपने घरों की ओर निकल जाते। आँगन में महुआ सुखाते और पेज और घुघनी खा-पीकर दोपहर में आराम करते। आवारा मवेशियों से सूखते हुये महुओं की देखभाल करते रहते। इसी तरह धीरे–धीरे महुआ का मौसम समाप्त हो गया। मैं फिर दामिनी के साथ इस तरह ज्यादा दिनों तक बैठक बतक्कड़ी नहीं कर सका था। बीते दो सालों में दामिनी से मेरी कोई मुलाकात नहीं हुई। शहर आने के बाद मैं गाँव कम ही जाता था। इसी बीच गाँव में सरकारी पानी रोको अभियान जोरों पर चल रहा था। पंचायतों में तालाब और छोटे-छोटे डैम बनाने के लिए बहुत सारा पैसा आया था।

गाँव की पंचायते तालाब और डैम बनाने में लगातार व्यस्त थीं। गाँव में किसी के पास समय नहीं है, सब अपने अपने काम में लगे हुए हैं। पंचायतें और सरकारी अमला ठान बैठे थे कि इस बार गाँव की धरती का जलस्तर बढ़ाकर ही रहेंगे। इस बार किसी भी प्रकार की गलती नहीं करेंगे, सरकार की इच्छा पर पानी नहीं फेरेंगे। एक-एक अधिकारी, कर्मचारी, पंच-सरपंच, ठेकेदार, मेट आदि सब अपनी-अपनी ड्यूटी पर तैनात थे। कार्यस्थल पर मजदूर किसी मेले की भीड़ की तरह दिखाई देते थे। ना काम की कमी, न ही मजदूरों की। तालाब और डैम की खुदाई जोरों पर चल रही थी। साप्ताहिक बाजार के दिन मजदूरों को मजदूरी का पैसा मिलता। मजदूर बाजार से दाना, किराना खरीदते और, दारू पीकर घर लौटते। बाजार का दिन किसी जश्न के दिन से कम नहीं होता। आदिवासी-वनवासी जश्न और मातम के दिन, दारू जरुर पीते हैं। फिर भला बाजार का दिन बिना दारू के कैसे बीतता।

आदिवासियों को एक साथ इतना सारा काम मिलने की ख़ुशी की खबर, चारों ओर फ़ैल गई थी। सबके चेहरे प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। अब काम के लिए गाँव छोड़कर बाहर कहीं भी नहीं जाना पड़ेगा। पूरी बारिश हँसी-खुशी से बीतेगी। पानी बरसता रहेगा और यें घर में बैठे-बैठे आराम से बनायेंगे-खायेंगे। थोड़ा बहुत काम जो घर के बैल -बकरी चराना होगा। बस इससे ज्यादा नहीं, गाँव छोड़कर कहीं बाहर तो नहीं जाना पड़ेगा। सब इसी बात से खुश थे !

एक सरकारी अमला, जो दिन भर जीप पर सवार रहता था। प्रत्येक खुदाई वाले स्थानों पर जाकर कार्यों का मुआयना करता रहता और जिला अधिकारी को रिपोर्ट प्रस्तुत करता। इस तालाब पर तीन चार मेट, उसी में एक मेट, मदन भी था। मदन स्वभाव से फक्कड़ था। बोलता तो खूब बोलता, हँसता तो हँसते ही रहता। किसी की मदद भी दिल खोल कर करता। बातें ऐसी करता कि कोई भी उसके चंगुल में जल्दी ही फंस जाता। सब लोग उसके इस बदले हुए स्वभाव से आश्चर्यचकित थे। कुछ दिनों पहले उसका स्वभाव ऐसा नहीं था। वह ऐसा क्यों हो गया था, किसी को कुछ नहीं पता। वह बूढ़े मजदूरों से कहता-थोड़ा आराम से काम करो। किसी को बहुत ज्यादा टोका-टाकी भी नहीं करता। सब कुछ इसी तरह चल रहा था ....। दामिनी भी उसी तालाब पर काम करने जाती थी। काम वाले स्थान पर दामिनी के साथ, कई लोग होते थे जिनमें–दामिनी के घर के लोग, उसकी सहेलियां, मोहल्ले–पड़ोस के लोग भी होते थे। शाम को सभी घर लौटते।

घर लौटते समय लोग गाँव की छोटी सी किराना दुकान की तरफ से ही लौटते। सब अपनी-अपनी जरूरत का सामान लेते। कोई नशे वाला मंजन लेते, कोई बीड़ी लेते,कोई नमक, कोई तेल, कोई दवा-दारू, कोई सर्दी खासी की गोली भी ले लेता, कुछ लड़कियां एक खास तरह की गोलियां लेती थीं जिनका नाम वे नहीं जानती थीं। वैसे दुकानदार को गोलियों के नाम बताने की कोई जरुरत भी नहीं थी। गोलियों के नाम बताने पर तो, उन्हें ढूंढ पाना उसके लिए और भी मुश्किल हो जाता। गोलियों के लिए बस बीमारी का नाम बताना जरुरी होता, पर लड़कियों को बीमारी का नाम बताने से भी छूट थी। दुकानदार के पास अलग-अलग डिब्बों में अलग–अलग तरह की गोलियां रखी थीं। उन सभी डिब्बों पर बीमारी का नाम लिखा होता था। इन सब के अलावा भी, एक विशेष तरह की गोली होती थी जो लडकियां खरीदती थी,पर उसके लिए पहले एडवांस पैसा लगता था और हजार रुपया से कम नहीं, और समय कम से कम चार-पांच दिन। दुकानदार जब दुकान के लिए माल लेने शहर जाता तब ही वह गोली भी लेकर आ जाता था।

गाँव की यह दुकान कहने को छोटी थी, पर जरुरत का सारा सामान यहाँ मिल जाता था। समय-बिपत पड़ने पर सलाहें भी मिलती थीं इस दुकान में। किन्तु सलाहों का निदानकर्ता दुकानदार ही होता था। गाँव में वह सबके सुख-दुःख का साथी था, जिनके पास ज्यादा पैसा होता, उनका थोड़ा ज्यादा ही साथी था। गाँव में धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा था, दामिनी भी.....! शाम को घर लौटकर सभी अपने-अपने काम में लग जाते थे, लड़के-लड़कियाँ पानी लेने, कुआं–पनघट पर चले जाते। दामिनी भी शाम को लौटती तो वह भी कुआं से पानी लाती, घर का झाड़ू-बर्तन करती, खाना बना देती और फिर, किसी सहेली के साथ नियमित रूप से डिब्बा लेकर घर के पीछे झाड़ियों की ओर निकल जाती थी। कभी कोई सहेली साथ चलने के लिए तैयार नहीं होती, तो उस दिन वह अकेली ही निकल जाती। किसी सहेली की ज्यादा खुशामद नहीं करती।

दामिनी बदल रही थी, काम के स्थान पर भी, किसी से ज्यादा बोलती–बतियाती नहीं, ज्यादातर गुमसुम ही रहा करती थी। उसकी सहेलियां उसके इस स्वभाव से परेशान हो जाती, पर कुछ कर भी नहीं पाती थी। वे कुछ नहीं समझ पा रही थी कि आखिर दामिनी को हुआ क्या है। उससे पूछते तो वह कुछ नहीं बस ऐसे ही.....कहकर टाल देती थी। कुछ लोग समझ रहे थे कि उसके घर के लोग भी काम पर आते हैं, शायद इसीलिए वह किसी से ज्यादा नहीं बोलती–बतियाती होगी। एक शाम उसकी एक सहेली उसके घर आती है, और दामिनी के बारे में पूछती है। दामिनी की माँ बताती है कि वह डिब्बा लेकर गई है। इतना सुनकर दामिनी की सहेली भी उधर ही चली गई जिधर वे हमेशा जाती थीं। वहां वो दामिनी को किसी लड़के के साथ देख लेती है। दामिनी का इस तरह किसी लड़के से बात करना और वो....सब करना। दामिनी की सहेली को अच्छा नहीं लगा। उसने यह सब दामिनी की माँ को आकर बता दिया। दामिनी के घर, उस रात को हंगामा बरपा। दामिनी की माँ बाल पकड़कर घसीटते हुए दामिनी को अन्दर ले गई, और डांटने लगी, गाली देने लगी–बता हरामजादी कौंन था तेरे साथ ? दामिनी मार खाती रही, रोती रही, कराहती रही, लेकिन उस लड़के का नाम अपनी जुबान तक नहीं आने दिया। दूसरे दिन दामिनी तालाब के काम पर नहीं गई। तालाब खुदाई का काम आज, रोज की तरह नही चल रहा था। कुछ महिलायें थोड़ी-थोड़ी देर में झुण्ड बनाकर, कुछ बातें कर रहीं थीं।

मदन को यह सब देखकर चिढ़ हो रही थी। उसका मूल स्वभाव जागृत होंने लगा था, वह कभी मजदूरों पर चिढ़ता और कभी स्वयं पसीना-पसीना हो जाता। मजदूरों पर झल्लाता हुआ कहता–साले सरकार के पास फ्री के पैसे होते हैं क्या ? ठीक से काम करो नहीं तो मजदूरी कटवा दूंगा। काम में मक्कारी और पैसे भी पूरे ...सरकार ने तुम्हें पालने का ठेका ले रक्खा है क्या सालों,जो तुम्हें हराम के पैसे बांटेगी ! काम में मक्कारी की तो सोच लेना, आधे दिन का पैसा कटवा दूंगा। तीन-चार महिलायें जो कि पचास-पचपन की उम्र के आसपास रहीं होंगी, उनको डांटते हुए–सरकार लकड़ी टेकने के पैसे नहीं देती अम्माओं, कल तुम्हारे घर से किसी जवान मर्द-औरत को काम पर भेजना ! मदन बड़बड़ाता हुआ....सब साले हरामखोर हैं ...! वह बड़बड़ाता हुआ ही मचान की ओर चला जाता है। मचान के नीचे जाकर खाट पर पसर जाता है, पसीना पोंछता है। पानी के घड़ों की ओर देखता है, जो आज अभी तक खाली ही थे।

दामिनी काम पर आती तो उसका काम होता इन घड़ों में पानी भरना और दिन भर मजदूर की टोलियों को पानी पिलाना। उसका पूरा दिन इसी तरह बीत जाता था। पर आज घड़ों में पानी नहीं था, और....नहीं थी सबको पानी पिलाने वाली दामिनी। आख़िरकार मदन ने दामिनी की एक सहेली को, जो हमेशा दामिनी के साथ पानी लेने जाती थी, उसको बुलाकर पानी लेने भेज दिया। वह लड़की घड़ों में पानी भरकर, फिर से तालाब की ओर काम करने निकल जाती है। कुछ देर बाद इस लड़की के पास कई महिलाएं झुण्ड बनाकर बातें करने लगती हैं। मदन कहता है अलग-अलग होकर, अपना-अपना काम करो। बातें मत करो... काम करो...।

अब तक दामिनी के घर की रात वाली घटना, सब लोग जान गए थे। ये भी जान गए थे कि दामिनी के घर रात को आग किसने लगाई थी। इसीलिए कुछ महिलायें बार-बार दामिनी की इस सहेली को घेर लेती थीं। पूछने की कोशिश करती थीं कि, रात में दामिनी को उसने किसके साथ देखा था। पर यह लड़की थी कि ज़रा भी जबान नहीं खोल रही थी। जैसे–जैसे इस लड़की के पास भीड़ बढ़ती जाती थी, वह लड़की पसीना–पसीना हो जाती थी। सब महिलाएं धीमी आवाज में ही उससे पूछती थी– बता न री..रात को कौन था दामिनी के साथ। पर कई महिलाओं की बहुत कोशिश के बाद भी वह लड़की उस लड़के का नाम नहीं बताती। दोपहर तक सब कुछ... इसी तरह चलता रहा। दोपहर को खाना खाने की छुट्टी हुई। खाना खाने की छुट्टी में दामिनी के घर वाले घर गए और दोपहर के बाद काम पर वापस नहीं आये। खाना खाने की छुट्टी के बाद, काम फिर से शुरू हुआ। काम फिर से अपनी लय में था। अब तक वनग्राम में सब कुछ इसी तरह चल रहा था।

कुछ देर बाद गर्द उड़ाती हुई एक जीप आई और तीन–चार साहब उसमें से उतरे। कार्यस्थल पर आकर देखते है। मदन से काम के बारे पूछते हैं – 'और मदन काम ठीक-ठाक चल रहा है

ना' ....? मदन - जी साब...। कोई परेशानी तो नहीं ....? नहीं साब.. । वाह भई मदन, तुम्हारे होते हुए भला किसको परेशानी हो सकती है। तुम तो ईनाम देने लायक काम करवाते हो भई। भई हम तुम्हारे काम के लिए ईनाम की सिफारिश जरूर करेंगे...। देखना मदन तुम जल्दी ही बड़े मेट हो जाओगे । बस इसी लगन और मेहनत से काम करते रहो... । धीरे-धीरे ठेकेदार हो जाओगे। फिर जीप खरीद लोगे, अपनी हवेली बना लोगे,मदन तुम तो फिर बड़े आदमी हो जाओगे । बस याद रखो ये लगन ना टूटे, समझे ...? मदन- जी साब...। बात करते–करते, साहब लोग मदन के साथ मचान की ओर चलने लगते हैं, मचान के नीचे बिछी खाट पर कुछ बैठ जाते हैं, कुछ पसर जाते हैं । हांफता हुआ...एक उम्रदराज अधिकारी, अपनी मुछों पर हाथ फेरता हुआ खटिया पर चित्त हो जाता है। जूतों को पैरों की सहायता से निकाल कर जमींन पर गिराता है और कहता है–मदन...। ऐ...मदन। मदन–जी साब, अरे भई पानी-वानी पिलवाओ भई, और फिर हांफने लगता है । फिर बोलने लगता है–बुलाओ भई तुम्हारी फुलझड़ी को।

एक काली शर्ट वाले साहब – ओय.. होय...सर .कट्टी कली को? वाह सर मैं तो भूल ही ड़हा था, वाह क्या सुन्डर है वो... एकडम.. लाडवाब.... कहता हुआ, लम्बी गर्दन करके पिच्च से थूकता है, फिर कहता है- पिछली बार की याद दिला दी सर आपने तो । वो मक्के की रोटी और चिकन, शराब और वो....। वाह सर ...तो फिर... आज भी सब कुछ उसी तरह रिपीट ना सर जी ? हाँ भई, तुम आज फिर से शेर हो जाना। अरे सर... पानी आ गया मुंह में।

एक साहब जो अभी तक चुप बैठा था, उठकर खड़ा होता है और लम्बी गर्दन करके पिच्च से थूकता है। घड़े से पानी निकाल कर कुल्ला करता है, आसमान की ओर मुंह फाड़कर गट-गट पानी गटकने लगता है। मदन की तरफ देखकर कहता है- क्यों बे.. क्या हुआ,तुम तो पसीना-पसीना हो गये, बुलाओं ना उस फुलझड़ी को। हमारे साहब आज उसीच के हाथ से पानी पियेंगे। अरे...रस्ते भर साहब उसीच की तारीफ कर रहे थे, घर से निकलते वक्त, घर में कहकर भी आ गये कि, आज ज्यादा डैम और तालाबों का दौरा करना पड़ा तो आज घर भी नहीं आ पायेंगे। बुजुर्ग अधिकारी- हाँ भई मदन आज की रात फिर हो जाये....! महुआ की दारू, मुर्गा और वो तुम्हारी ......! अरे यार मदन-मेरी औरत तो साली खा-खाकर मुटिया गई है। हथिनी हो गई है साली । कम से कम दौरे वाली रात तो पतली कमर वाली के साथ .....। इतने में काली शर्ट वाले साहब-ओय...होय ..बस सर...मुंह में पानी आ गया । मदन सब कुछ चुपचाप सुनते जा रहा था और साहब लोग बारी–बारी से बोलते जा रहे थे। लगातार बोलने पर भी मदन जब कोई जवाब नहीं देता तो, एक साहब जो अब तक एकदम चुप बैठे थे, अपनी साहबगिरी दिखाते हुए बोले– क्यों बे साले..! ऐसे टकटकी लगाकर क्या देख रहा है बे ? साले बोलता क्यों नहीं बे कुछ, मुंह में दहीं जमाकर रक्खा है क्या ? दूसरे साहब कुछ नरमी से- अरे यार खांमखां बिगड़ते क्यों हो । जाओ मदन बुला लाओ भई उसे, सबको नाराज मत कर। सब उसकी झलक देखना चाहते है, अरे भई दिन में हम थोड़े ही उसे छेड़ेंगे। हमें भी तो उसकी इज्जत का ख्याल है, और उससे ज्यादा हमारी इज्जत का भी ध्यान रखना है भई । कोई अगर यह देख लेगा तो क्या सोचेगा कि, इतने बड़े-बड़े साहब और एक गंवार लड़की के साथ......छिः...।

एक साहब – भई मैं तो उसीच की प्यास लेकर आया हूँ। साहब ने पिछले दौरे की इतनी तारीफ कर दी कि, मुझसे भी नहीं रुका गया और मैं भी आ गया हूँ, मेरी भी इस दौरे की पहली रात सफल हो जाये। आज मैं भी पहली बार महुआ की दारू पिऊंगा, मुर्गा खाऊंगा और....। इतने में एक बुजुर्ग दौड़ता-हांफता हुआ वहां आकर कहता है- साहब मेरी लड़की बेहोश हो गई। वो चक्कर खा कर गिर गई साहब ...उसे बचा लो साब नहीं तो वो मर जाएगी। साब ..उसे बचा लो साब ..साब ..उसे बचा लो कोई..उसे बचा लो ..। जो लड़की बेहोश हो गई थी, वह दामिनी की वही सहेली थी, जिसने सुबह आज घड़ों में पानी भरा था, जिसके कारण दामिनी के घर पर रात भर हंगामा बरपा था और जिसके पास दामिनी के प्यार का राज था। आज वह लगातार कई महिलाओं और लड़कियों से घिरी रही थी।

जब से साहब लोग आये हैं, वह उनकी तरफ देखती, जोर-जोर से सांस लेती, कभी-कभी पसीना–पसीना हो जाती और कुछ देर के बाद बेहोश ही हो जाती है, जिसकी सूचना उसके पिताजी, मचान पर आकर देते हैं। उसे कुछ देर के लिए होश आता

> गाँव में एक नई खबर फ़ैल गई थी कि दामिनी को उसके बाप ने चालीस हजार रु.में बेच दिया और दारु पीकर घूम रहा है । वो लोग आठ दिन में आकर, दामिनी को ले जायेंगे । ब्याह करके ले जाने की बात हुई है । ठीक आठवे दिन दामिनी के घर पर एक जीप में सवार होकर, आठ–दस लोग आते हैं और शादी-विवाह की सीधी सरल रश्में पूटी करके दामिनी को ले जाते हैं। दामिनी ससुराल चली गई थी।

तो सिर्फ देखती रहती, पर बोलती कुछ नहीं। उसे उठाकर मचान की छाँव में लाया जाता है। जमीं पर एक बोरे का फट्टा बिछाकर उसे चित्त लेटाया जाता है। कभी वह आंख खोल कर देखती है ...और खुद को बहुत सारे लोगों से घिरा हुआ पाती है, कुछ साहब लोग उसे सहला रहे है, कुछ माथा और बालों पर हाथ फेरते हैं, कुछ लोग हाथ-पांव छूकर देखते हैं कुछ बोल रहे हैं, इसे लू लग गई है। इतनी देर में वह एक बार चीखती है...नहीं ..और जोर से चिल्लाती है–मुझे छोड़ दो....और फिर अचेत हो जाती है। दामिनी की अचेत सहेली एक भयावह रात का दृश्य देखने लगती है। जिसमें उसे दीखता है- दामिनी के साथ घर के पिछवाड़े की झाड़ियों में उसका प्रेमी और दामिनी, दोनों आपस में कुछ बात कर रहे हैं। वह दामिनी से कह रहा है–उठ दामिनी, साड़ी सुधारकर पहन ले। दामिनी दर्द तो नहीं हो रहा है ना ? उठ मेरी दम्मो।

और... उसे सिलसिलेवार दिखता है– वह दामिनी से कहता–प्लीज दामिनी, बस अब सिर्फ एक बार और। अबकी अंतिम बार होगा। फिर उसके बाद तो बारिश ही शुरू हो जाएगी, काम भी बंद हो जायेगा और ये साहब लोग भी नहीं आयेंगे, फिर तुम्हें मेरे अलावा कोई छुएगा तक नहीं। अरे दम्मो मैं कहता हूँ, फिर तुम्हें कोई देखेगा तक नहीं। और इस बारिश के बाद तुम हमेशा के लिए मेरी हो जाओगी, लेकिन दामिनी तुम्हें साहब लोगों के लिए एक बार और आना होगा बस। कल साहब लोगों का फोन आया था, उन्होंने एक रात के लिए तुम्हें और बुलाने को कहा है। कह रहे थे कि, कोई एक और साहब भी साथ आयेंगे, जो इन सबके भी बोस है। उनके ही हाथ में सबका परमोसन का अधिकार होता है, वो लोग कह रहे थे कि मेरा भी परमोशन करवा देंगे, उनकी ही रिपोट जाने पर परमोसन होता है। कह रहे थे कि मेरे बारे में भी अच्छा लिखवा देंगे ..। और...वो तो ये भी कह रहे थे कि, अगर उनको नाराज किया तो किसी की नौकरी भी जा सकती है। मुझे कह रहे थे कि अपनी तरक्की और नौकरी दोनों के बारे में सोच लेना। अगर दौरे वाली रात तुम नहीं होगी तो मेरी नौकरी नहीं बच पायेगी। और नौकरी ही नहीं बचेगी तो हम फिर शादी कैसे करेंगे। दामिनी समझो प्लीज। सिर्फ एक बार तुम्हें अपनी माँ से और झूठ बोलना पड़ेगा कि तुम अपनी सहेली के घर सोने जा रही हो। बस सिर्फ एक रात और दामिनी फिर कभी नहीं।

बेहोश लड़की को फिर एक बार होश आने को होता है। उसके होंट हिलने को होते हैं, जैसे वह कुछ बोलना चाहती है, पर बोल नहीं पा रही हो। इस बीच कुछ साहब लोग घड़े से खुद ही पानी निकाल–निकाल कर पीने लगते हैं। बेहोश लड़की ज़रा सी हिलती है, फिर अचेत हो जाती है। एक साहब उसकी गर्दन को ऊपर उठाते हुए थोड़ा सा पानी पिलाने का प्रयास करते हैं, पानी गिरता हुआ लड़की की गदरन के नीचे जमींन पर गिर जाता है। बेहोश लड़की फिर से अचेतावस्था में चली जाती है और फिर से वही दृश्य उसके दिमाग में चलने लगता है। साहब लोगों के दौरे वाली रात, दामिनी अपनी माँ से झूठ बोलकर मदन के साथ इस मचान पर ही इन साहब लोगों के पास जाती है। मुर्गा और मक्के की रोटी बनाती है, मदन दारू लेकर आता है, साहब लोग मदन के साथ मिलकर दारू पीते हैं, फिर बना हुआ मुर्गा और रोटी खाते हैं। इस बीच कोई-कोई खाना बनाती हुई दामिनी के पास बैठकर उससे कुछ-कुछ बोलते रहे। कुछ उसकी देह से भी छेड़छाड़ करते रहे।

काली शर्ट वाले साहब कुछ ज्यादा ही रंगीन मिजाज आदमी हैं, वे ही ज्यादातर दामिनी को छेड़ रहे थे। सब लोग खाना खा लेते हैं और उताने होने लगते हैं। सोने के पहले सब बारी-बारी से दामिनी के साथ एक तूफानी खेल खेलते और ढेर होकर, लम्बी सांसे भरने लगते हैं। दामिनी बुरी तरह से रौंदी जा रही थी, मसली जा रही थी। वह कराहती रही, सिसकती रही पर किसी को कुछ भी करने का मना नहीं करती। सब कोई उसे अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार मसल रहे थे, रौंद रहे थे और वह किसी बेजान वस्तु की तरह लेटी रही। दामिनी रात भर सुबकती रही। कुछ दामिनी को रौंदते रहे और कुछ खर्राटे भरते रहे। मदन उस रात इतनी दारू पी लेता कि उसको स्वयं का भी होश नहीं रहता। भोर बेला में दामिनी उसे किसी तरह जगाती और घर चलने को कहती। मदन को होश आया तो उसने दामिनी को देखा। दामिनी की आँखे रात भर रोने और जागने में सूज कर लाल और मोटी हो गई थी, ऊपर के होंट पर खून की पपड़ी जमी थी। दामिनी को उसने इस हालत में देखा तो उसका रहा-सहा नशा भी, खत्म हो गया था। मदन ने दामिनी का हाथ पकड़ा और बोला चल दामिनी..। चल...। साले सब उताने होकर पड़े हैं। दामिनी ने चलने से पहले काली शर्ट वाले साहब को एक बार अच्छे से देखा था। उसे देखते हुए दामिनी का चेहरा एकदम सख्त हो रहा था। सुबह ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। मदन और दामिनी घर की ओर निकल गये थे और साहब लोग सो रहे थे। एक तेज हवा का झोका आया और धूल उड़ाता हुआ आगे निकल गया। ड्रायवर की नींद खुल गई। देखा कि सुबह हो गई तो सभी साहब लोगों को जगाने लगा। साब जी.. उठिए साब जी ... सुबह हो गई। काली शर्ट वाले साहब पहले उठे। ड्रायवर गाड़ी साफ़ करने लगता है, और साथ–साथ काली शर्ट वाले साहब से बातें करता है। देखता है साहब की नाक के पास खून लगा हुआ है। वह साहब को बताता है–साहब आपकी नाक के पास खून लगा हुआ है। साहब खून को हाथ से साफ़ करते हुए गाड़ी के शीशे में जाकर देखतें हैं। नाक के पास कहीं कोई चोट

नहीं थी और बिना कोई चोट के निकले इस खून को लेकर दोनों आश्चर्यचकित थे। अचानक काली शर्ट वाले साहब ने कहा–समझ गया..सब समझ गया। साली होंठ... के लिए मना कर रही थी। जोर से खीचकर एक तो बाँहों में दबोच रखा, दूसरे रात भर होठों को चूसते रहा-चबाते रहा। होंठ और खून दोनों का स्वाद मिलकर एक हो गया था। कैसे बयाँ करूँ रात का आनंद। मुझे तो कुछ देर के लिए लग रहा था कि जैसे मैं सचमुच सिंह हो गया हूँ। साली अगले दौरे में सब कुछ चुपचाप करने देगी। ड्रायवर बोला– नई गाड़ी है साहब, अभी रफ्तार नहीं समझती। साहब- हाँ तुम सच ही कहते हो। इनकी बातें सुनकर, सबकी नींद खुलने लगती है, बारी-बारी से सब उठते हैं, कपड़े पहनकर, शहर की ओर रवाना हो जाते हैं ...।

बेहोश लड़की के होंठ ज़रा से खुलने को हुए, उसके शरीर से लगातार पसीना निकल रहा था, वह कभी-कभी चेहरे की आकृति अजीब सी बना रही थी और बिगाड़ रही थी, दांत पीस रही थी। वह एक बार जोर से चीखी और उठकर बैठ गई। बचाओ–बचाओ कहती हुई वह, तालाब की ओर भागने लगी। जोर-जोर से चिल्लाने लगी ! तुम सब पापी हो, मैं सबको बता दूंगी तुम्हारा पाप। कमीनों मैं दामिनी की बात सबको बता दूंगी, तुम्हें नहीं छोडूंगी। वह बोलती जा रही थी, चलती जा रही थी और लड़खड़ाकर गिर जाती है, फिर अचेत हो जाती है। फिर से उसके चारों ओर भीड़ इकट्ठी हो जाती है।

> गाँव वालों ने पंचायत की और दामिनी के पिता के लिए यह फरमान जारी किया कि अगर, गाँव में रहना है तो, लड़की के पेट से बच्चा गिराना पड़ेगा, नहीं तो आठ दिनों के अंदर गाँव छोड़कर जाना पड़ेगा। पानी में रहकर मगरमच्छ से बैर कैसे किया जा सकता है भला। आखिरकार दामिनी का बाप भी सामाजिक मर्यादा को मानने पर विवश हो ही गया।

साहब लोग मदन से कहते हैं- मदन हम लोग चलते हैं। अभी कुछ और जगहों पर तालाब और डैम चैक करने जाना है, शाम भी हो रही है। लगता है कि बुखार लड़की के दिमाग में चढ़ गया है। हम लोग जाते–जाते डॉ. रामू को भेज देंगे। अगर ठीक नहीं होगी तो शहर के अस्पताल में भर्ती करवा देंगे। वहां हमारी जान-पहचान भी है, सब कुछ ठीक हो जायेगा। साहब लोग, लड़की के पिता से कहते हैं- दादा घबराओ मत, हम तुम्हारे साथ हैं। मदन ने शहर का अस्पताल देखा है, इसको मदन ही ले आएगा अस्पताल तक। मदन जो कुछ भी होगा, हमको फोन करना, शहर आने का कोई साधन नहीं मिलेगा तो हम जीप भेज देंगे। लड़की के पिता से-ठीक है दादा, हम लोग चलते हैं। ड्रायवर गाड़ी स्टार्ट करो ...। जी साब..।

थोड़ी देर बाद गर्द उड़ाती हुई जीप हवा हो जाती है। गर्द का एक गुबार आसमान को चुनौती देने खड़ा हो जाता है। किन्तु थोड़ी ही देर में धरती की सतह से फिर चिपक जाता है। थोड़ी देर बाद लड़की को होश आ जाता है। आज की दोपहर के बाद का सारा काम इसी तरह हुआ। आज तालाब खुदाई का काम ना के बराबर ही हुआ था। कुछ लोग जो काम कर रहे थे वे भी रह-रह कर बेहोश लड़की को देखने चले आते थे। आज मदन जो काम की देखरेख कर रहा था, लड़की के बेहोश हो जाने के बाद से किसी से कुछ नहीं कह रहा था। दामिनी के घर वाले भी दोपहर के बाद काम पर नहीं आये थे। उधर दामिनी के पिता ने दोपहर से ही दारू पीना शुरू कर दिया था। शाम को घर लौटे हुए लोगों ने देखा कि वह दामिनी को लगातार डांट रहा था और उसकी माँ उसे लगातार पूछ रही थी- बता, रात को कौन था तेरे साथ ? दामिनी थी कि उस लड़के का नाम भी जबान तक नहीं आने दे रही थी। दूसरे दिन मदन सारा काम एक दूसरे मेट को समझाकर, शहर चला जाता है। और कुछ दिन बाद शहर से भी कहीं दूर निकल जाता है। दामिनी को मदन के गायब हो जाने की खबर मिल गई थी, किन्तु वह सोच रही थी कि उसने मदन से सच्चा प्रेम किया है और वह लौटकर जरूर आएगा।

दामिनी ने आफत-मुसीबत के दिनों में अपनी इज्जत तक लुटाकर उसकी नौकरी बचाई है, वह इस कुर्बानी को कभी नहीं भूल सकता। वह धोखेबाज नहीं है। पर राह देखते–देखते, छह महिने बीत गये थे। उसका पेट लगातार बढ़ता ही जा रहा था। समाज की सारी महिलाएं समझ गई थी कि, दामिनी के पेट में बच्चा है। अपने स्वभाव के अनुसार महिलाएं, खाली समय में अटकलें लगाती रहती कि, उसके पेट में किसका बच्चा होगा।

दामिनी के 'पेट से' होने की खबर आग की तरह फ़ैलकर राख हो रही थी, किन्तु बची हुई चिंगारी हवा लगते ही सुलगने लगती थी। गाँव में कोई भी नया व्यक्ति आता तो कुछ लोग-जिनका, ऐसी खबरें फैलाने का हमेशा ही काम होता है, जल्दी से उनके कानों में किसी मन्त्र की तरह फुसफुसा देते थे। दामिनी के परिवार का समाज में हुक्का पानी, लेन-देन, आवा-जाही, धीरे-धीरे सब कुछ बंद हो गया था। इनके घर के सब लोग सिर नीचा करके

चलते थे। लोग ताने मारते थे कि बिन ब्याही लड़की 'पेट से' है, और उसको घर में रखते हैं।

इनको देखकर कोई भी बिना वजह थूकता और मुंह फेरकर जल्दी से बगल हो जाता था। इनके घर में जो हुआ था वो सामाजिक मर्यादा के खिलाफ था। समाज ने आज तक बिना ब्याह के पेट में बच्चा रखने की किसी को भी अनुमति नहीं दी है। और दामिनी बिना ब्याह के पेट में बच्चा रखे हुयी है। दामिनी के घर के लोग इस समाज से परेशान थे और समाज के लोग इस घर से। समाज सोचता था- ये कैसा घर है? और ये घर सोचता था- ये समाज कैसा है? जब आप कहीं फंस जाते हैं, तब आपको सारे नियम क़ानून बंधन लगने लगते हैं, वहीं वे दूसरों के लिए जरूरी लगते हैं। एक दिन गाँव वालों ने पंचायत की और दामिनी के पिता के लिए यह फरमान जारी किया कि अगर, गाँव में रहना है तो, लड़की के पेट से बच्चा गिराना पड़ेगा, नहीं तो आठ दिनों के अंदर गाँव छोड़कर जाना पड़ेगा। पानी में रहकर मगरमच्छ से बैर कैसे किया जा सकता है भला। आखिरकार दामिनी का बाप भी सामाजिक मर्यादा को मानने पर विवश हो ही गया।

एक रात दामिनी के घर से कई आवाजें एक साथ आती रहीं। दामिनी चीख रही थी, उसकी माँ, उसे लगातार डांट रही थी। एक बुजुर्ग महिला-बस ..थोडा सा और, जरा सीधी रह, थोड़ी देर पैर को ऊपर करके रख, लम्बा मत कर। दामिनी की माँ दामिनी को एक थप्पड़ जड़ देती है, हरामजादी कुत्ती ..कहीं की.. , पता नहीं तूने मुझसे किस जन्म का बदला निकाला है, अगर ऐसा पता रहता तो तुझे जन्म लेते ही मार डालता। जब से जन्मी है, कलमुँही ने जीना हराम करके रक्खा है। एक तो तेरे जन्म के बाद से ही एक साल तक तेरे बाप ने मुझे मायके से वापस नहीं लाया और लाया भी तो मेरी सास तुझे जनने पर अभी तक ताने सुनाती है। और...और .....कलमुँही तू मुंह काला करके हमारी इज्जत को ऐसे मिट्टी में मिला देगी, ये क्या पता था। साली तुझे जन्म लेते ही मसल कर मार डालती तो आज ये दिन न देखने पड़ते। तेरे कारण ही गाँव में हुक्का-पानी सब बंद है। देखती नहीं तेरा बाप मर्द होकर नीचा सिर करके चलता है।

बेटी ...घर की मर्यादा का ज़रा सा तो ख्याल रहता तुझे! अब भी वक्त है, इज्जत बचाने का। चल मान जा बेटी.. लेट जा.. । रमिया को करने दे उसका काम, रमिया जरा आराम से काटना। चल लेट जा बेटी नहीं तो तेरा बाप, तेरे साथ मुझे भी काट डालेगा। वो ऐसा मरद है कि जो एक बार कह देता है, वही करता है। तू नहीं जानती क्या उसको..?

बस फिर एक बार ही दामिनी कहती है- माँ इस बच्चे को जन्म लेने दो माँ, ये मदन की अमानत है और ये मेरा भी सब कुछ है माँ। मैं इसे देखना चाहती हूँ माँ ..ये कैसा दिखेगा? उसके बाप की तरह या... ? लड़का होगा या लड़की? माँ..मान जाओ माँ...। एक जोरदार थप्पड़ जड़ने और पीठ पर धमा-धम घूसे पड़ने की आवाज। किसी मर्द की आवाज – सोच रहा था जनाना कमरे में नहीं आऊंगा, लेकिन बहुत देर से सुन रहा हूँ, साली ज्ञान दे रही है। मैं उसे धोखा नहीं दे सकती.., बच्चे को जन्म लेने दो.., मैं उसे देखना चाहती हूँ....वाह.. बहुत खूब ...। वाह, तू उसे धोखा नहीं दे सकती, पर सगे बाप को धोखा दे सकती है, बाप की इज्जत मिट्टी में मिला सकती है, समाज से उसका दाना-पानी बंद करा सकती है।

तुझे पराये आदमी पर भरोसा हैं, जो गायब है। घर-परिवार के सम्मान और दाना-पानी का ख्याल नहीं है तुझे। और फिर.... कमरे के अन्दर से कई लोगों के एक साथ रोने की आवाजें। दामिनी, उसके माँ-बाप, सब एक साथ अलग-अलग तरह के दुखों से रो रहे थे। दामिनी कहती है- नहीं, मैं बच्चा नहीं गिराउंगी..। दामिनी की इस बात से उसका बाप एकदम भड़क गया और जोर जोर से बोलने लगा कैसे नहीं गिराएगी मादरच...। बांधों इसके हाथ-पैर, रंडी बनेगी साली.... मादरच....। और उसके बाद सिर्फ दामिनी के रोने–चिल्लाने और सिसकने की आवाजें आती रही, और फिर बाद में सिर्फ सिसकियां भर आ रही थीं। सुबह तक सब कुछ शांत हो गया था, जैसे इस गाँव में सारी रात कुछ भी नहीं हुआ हो।

सूरज के उजाले में सब कुछ वैसा ही था, जैसे रोज होता है। भोर बेला में- एक महिला पड़ोसी गाँव की रमिया, जो मरे हुए जानवरों का चमड़ा निकालने का काम करती है, दामिनी के घर से एक झोले में कुछ लेकर जा रही थी, जिसमे से खून टपक–टपक कर रास्ते भर निशानी छोड़ रहा था। डिब्बा लेकर शौच जाने वाले लोग रात का सब माजरा समझ गए थे। ऐसे संकट के समय में यह बूढ़ी रमिया ही 40-50 सालों से गाँव वालों के काम आयी है। इस बुढ़िया को जीवनभर का अनुभव है, ऐसे कई मामले निबटाने का।

चार साल हो गए, मदन का कहीं कोई पता नहीं चल पा रहा था। दामिनी भी अब, मदन को धीरे-धीरे भूलने लगी थी। समाज में फिर से सब उसी तरह से रहने लगे थे। दामिनी भी समाज में पहले की तरह घुलने-मिलने लगी थी। सामान्य तौर पर अब लोग उससे ज्यादा परहेज नहीं करते थे। हाँ आसपास के गाँव तक उसके बदचलन होने की और एक बच्चा गिरा देने की खबर फ़ैल गई थी। दामिनी सुन्दर थी और गाँव के बिगड़ैल कब मानने वाले थे। गाँव के गबरू उसे छेड़ने से बाज नहीं आते, मौका पाकर सब उससे एक बार... की मांग करते। दामिनी बिना कुछ कहे वहां से चुपचाप आगे बढ़ जाती। कुछ दिनों बाद, दामिनी के बाप ने एक

खबर चारों तरफ फैला दी थी कि, उसे मदन कहीं भी और कभी भी मिलेगा तो उसका सिर काटकर, माँ चंडी के चरणों में चढ़ा देगा । जिसने उसका जीना हराम कर रक्खा है, वह उसे भी नहीं जीने देगा। वनग्राम में सब कुछ इसी तरह से चल रहा था।

दो साल बाद एक दूर गाँव से, दामिनी के लिए रिश्ता आया वहां उसका ब्याह तय हो गया। वर-पक्ष के लोग आठ दिनों के अन्दर ब्याह करने की मांग करते हैं। दामिनी के पिता की भी दिली इच्छा यही थी कि, विवाह जितना जल्दी हो उतना ही अच्छा होगा। लेट -लतीफी में कहीं कोई पुरानी बात पता ना चल जाये। एक रात वह खूब दारू पी लेता और गली में खड़ा होकर जोर-जोर से बोलता है – साले हरामखोरों... । तुम सब मेरा मजा देखना चाहते थे ना ..? तो, साले कान खोल कर सुन लो ..., आठ दिन के अन्दर लड़की का ब्याह करके दिखाऊंगा।

हुक्का-पानी बंद करेंगे साले ...हीं...थू ....।

भगवान् ने सबके घर बेटी दी है, सालों देखता हूँ कब तक पाक–साफ़ बचे रहोगे तुम इस गाँव में ? ह र रा म खोरों....दे ख ता ..हूँ .. ।

बोलता-बोलता वह बरामदे में ही लुढ़क जाता है और बड़बड़ाते रहता है। बड़बड़ाते- बड़बड़ाते रात में पता नहीं कब सो जाता है ...कुछ देर बाद लोग उसे बड़बड़ाता हुआ छोड़कर अपने-अपने घरों में जाकर सो जाते हैं। दिन निकलने पर सूरज के उजाले में सब कुछ वैसा ही था जैसा होता है, जैसे रात में कुछ हुआ ही न हो।

गाँव में एक नई खबर फ़ैल गई थी कि दामिनी को उसके बाप ने चालीस हजार रुपये में बेच दिया और दारू पीकर घूम रहा है। वो लोग आठ दिन में आकर, दामिनी को ले जायेंगे। ब्याह करके ले जाने की बात हुई है। ठीक आठवे दिन दामिनी के घर पर एक जीप में सवार होकर, आठ–दस लोग आते हैं और शादी-विवाह की सीधी सरल रश्में पूरी करके दामिनी को ले जाते हैं। दामिनी ससुराल चली गई थी। और इधर उसकी बची हुई यादों को गाँव के लोग समय–समय पर किसी कहानी की तरह दुहराते रहते थे। एक-दो महीने तक दामिनी के अच्छे भले की खबर आती रही। बेटी को सावन में घर लाने गए उसके बाप ने देखा–दामिनी सूखकर कांटा हो गई है। दिन रात काम में व्यस्त रहती है। उसके ससुराल वाले दामिनी को अभी मायके नहीं भेजना चाहते थे।

दामिनी की सास बोली- समधी जी विवाह में बहुत खर्च हो गया है। लोग शादी के समय दिया हुआ उधार मांगने छाती चढ़ते हैं, जब देखो तब, दरवाजे पर आकर खड़े हो जाते हैं। अभी काम करके कर्जा फेड़ने दो फिर फुरसत के दिनों में आकर ले जाना। पहली जंचकी वहीं करवाएंगे समधी जी। तब तो दो-तीन महिना वहीं रहेगी तुम्हारी बेटी। दामिनी के पिता ने एक बार फिर जिरह की तो,जंवाई से न रहा गया। मोर्चा संभालता हुआ तुनककर बोला- ससुर जी पूरे चालीस हजार दिए है, तुमने जीवन भर में भी इतनी बड़ी रकम एक साथ नहीं देखी होगी, फोकट में नहीं लाया हूँ इसे। पूरी रकम एक साथ अदा की है, विवाह का कर्ज तो पूरा कर लेने दो तुम्हारी बेटी को। ये कर्ज मेरा बाप थोड़े ही पूरा करेगा। जाओ अभी नहीं भेजेंगे। और अगर अभी ले ही जाना है तो फिर कभी वापस मत भेजना। वैसे भी साली....और फिर बोलते–बोलते रुक जाता है और वहां से चला जाता है।

दामिनी के पिता आगे फिर कुछ नहीं बोलते। वह जानते थे कि दामिनी के पक्ष में ज्यादा कुछ बोलना खतरे से खाली नहीं था। कहीं कोई पुरानी बात खुल गई तो ..? फिर सब कुछ बिगड़ने में देर नहीं लगेगी। वह दामिनी को बिना लिए ही लौट जाते हैं। समय बीतता गया ...दो माह, चार माह, छह माह, दस माह, अभी तक दामिनी की खबर दूर–दूर से ही मिला करती थी, उसके पिताजी उसे लेने के लिए, दूसरी बार जाने की हिम्मत नहीं कर पाते। और उधर उसके ससुराल में दामिनी का पुराना किस्सा पता चल जाता है। दामिनी के पति को जब यह बात पता चली तो, वह सन्न रह गया।

उसे लगा जैसे उसके पैरों के नीचे से जमीन ही खिसक गई। वह किसी गहराई में लगातार धंसता ही जा रहा था। उसे लगा कि उसकी पूरी दुनिया ही उजड़ गई है। वह घर से दूर एक एकांत में जाकर खूब रोता है और शाम को दारू पीकर घर लौटता है। दामिनी को ढूंढता है, बाल पकड़कर घसीटता हुआ, घर के सामने वाले बरामदे में लाता है और उसके पेट पर एक जोरदार लात मारता है, उसको जमीं पर गिरा देता है, लात घूंसे से उस पर कई प्रहार करता है। दामिनी चीखती रही, चिल्लाती रही और मार खाती रही। साली बहुत प्रेम करती थी ना मदन से ...मादरच.....क्यों नहीं घुस गई उसीच के घर में ..., मेरी किस्मत फोड़ने यहाँ क्यों आई है....हरामजादी..? एक साल हो गए साली का गरभ इसीलिए नहीं ठहरता, न जाने कितने गरभ गिराए होंगे हरामजादी ने। अभी तो एक का ही पता चला है। रुक साली बताता हूँ तुझे, प्रेम करने का मतलब क्या होता है। शोर-शराबा सुनकर कई लोग घर के सामने, दूर से ही यह सब देख रहे थे। वह मसाला पीसने वाला सील का पत्थर उठाकर लाता है और जोर से उसके सिर पर पटक देता है। सिर फूटने की आवाज आती है.....फट्ट...। दामिनी मछली की तरह तड़पने लगती है, फड़फड़ाने लगती है। वह एक दीया उठाकर लाता है और दामिनी के ऊपर फेंक देता है, घर के अन्दर घुसता है, कुछ कपड़े निकालकर लाता

है और उसके ऊपर डाल देता है। एक तेल का डिब्बा लेकर आता है, और डिब्बे का तेल उस पर उड़ेल देता है। वह जलती हुई थोड़ी देर तक फड़फड़ाती रही और फिर हमेशा के लिए शांत हो गई थी। यह तमाशा देखने वाले सब लोग धीरे-धीरे अपने–अपने घरों में जाकर घुस जाते है।

दूसरे दिन सूरज के उजाले में, घर के बरामदे में एक मछली की तरह भूंजी हुई काली–नंगी, मरी हुई देह पड़ी थी, जिसकी मृत्यु की गवाही देने वाला कोई नहीं था, सिर्फ एक पत्थर के सिवा, जिस पर खून के दाग लगे थे। पर वह पत्थर था, जो बोल नहीं सकता था और बोलने वाली दामिनी मर चुकी थी। वह भी नहीं बता सकती थी अपनी मृत्यु का सच। दामिनी का पति और सास-ससुर घर से गायब थे। प्रत्यक्षदर्शी गाँव के लोग हमेशा की तरह 'कुछ नहीं देखा' की मर्यादा का पालन करने वाले लोग थे।

अपनी पढाई पूरी करके कई दिनों के बाद, जब मैं गाँव लौटा तो मुझे दामिनी की यह कहानी सुनने को मिली और बरगद के पास नहीं जाने की सलाह। गाँव लौटने पर मुझे पता चला कि- अब तक मैं कई ...चीजों को खो चुका था ! कुछ दिनों बाद अखबारों में एक खबर छपी थी- "अपने गाँव लौट रहा, सेक्स स्कैंडल का ईनामी अपराधी बना बूढ़े पागल का शिकार"

मुख्य सड़क से गाँव को जोड़ने वाली सड़क के पास एक युवा, बूढ़े पागल का शिकार उस समय बन गया, जब वह छह साल बाद अपने गाँव लौट रहा था। सड़क के आसपास कई दिनों से रहने वाला बूढ़ा पागल जो अब तक कई लोगों को अपना शिकार बना चुका है, वह कई सालों पहले भी इसी गाँव के बरगद के पेड़ के पास रहता था और पेड़ के आसपास से गुजरने वालों को पत्थर मारता था। आने-जाने वालों को बेवजह परेशान करता था। पुलिस शिनाख्त में अपराधी युवा के पास, शहर से गाँव लौटने का टिकट, कुछ रूपये और एक परिचय पत्र प्राप्त हुआ है, जिस पर उसका नाम– अक्षयराज सिंह उर्फ़ मोहित सिंह उर्फ़ मदन, साथ में एक फोटो एलबम, जिसमें अलग-अलग भेष में उसी के कई फोटो के साथ, कई लड़कियों की फोटो भी मिली है, लड़कियों के फोटो के पीछे, फोटों की सुन्दरता के हिसाब से कीमत लिखी थी। किसी पर बीस हजार, किसी पर तीस हजार, किसी पर चालीस हजार, किसी पर पचास..। जितनी सुन्दर फोटो उतनी ज्यादा राशि...। एक लड़की की ऐसी भी फोटो मिली है, जिस पर उसने अपना नाम 'मदन' लिख रखा था।

उधर कई दिनों से, सेक्स स्कैंडल और कई आपराधिक मामलों में, पुलिस को भी इस अपराधी की तलाश थी। गाँव वालों के लिए राहत की बात यह है कि, पागल खाने से कई बार भाग चुके, उस बूढ़े पागल को पकड़ कर फिर से पागल खाने पहुंचा दिया गया है। इस खबर को पढने के बाद मेरे हाथों से अखबार की पकड़, निरंतर ढीली पड़ती जा रही थी और फिर अखबार मेरे हाथों से छूट ही गया था...। हवा का एक तेज झोका आया और जमीन पर पड़े अखबार को चार के पेड़ की ओर उड़ा ले गया। अख़बार में छपी खबर की सभी लाइनें बिखर गयी थीं। मुझे आगे दिखता है बरगद का पेड़। मुझे लग रहा था जीवन के सारे अनुभव किसी कहानी में बदल गए थे। जमलू का बेटा उस दिन बरगद की हरी हरी कोमल पत्तियों को तोड़कर नीचे गिरा रहा था और सुनीता उनको उठा-उठाकर बकरियों के सामने डाल रही थी। सुनीता और जमलू के लड़के की बकरियाँ बरगद की कोमल पत्तियों को खा रही थी। सुनीता अब तक जमलू के लड़के से प्रेम करने लगी थी। दोनों दिन भर साथ में ही बकरियां चराया करते थे। दामिनी मर गई पर सुनीता आज भी जिन्दा है प्रेम करने के लिए। हजार छलावों और लुटने-पिटने के बाद भी प्रेम के लिए जिन्दा रहेंगी वनग्राम की लड़कियां !